PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 2, ISSUE 2

मनोहर श्याम जोशी की कहाणीयों में सामाजिक चित्रण

शोधछात्रा
नलावडे विद्या जिजाभाऊ
हिंदी विभाग
चां. ता. बोरा महाविद्यालय शिरूर
सा. फुले पुणे विद्यापीठ पुणे

शोध निर्देशिका
डॉ. सविता ज. सबनीस
एम.ए.एम.फिल,बी.एड.,पीएच.डी
सहयोगी प्राध्यापक अध्यक्ष हिंदी विभाग
मॉडर्न महाविद्यालय, गणेशखिंड, पुणे–१६.

प्रस्तावना :

साहित्य और समाज का गहरा संबंध है। इसलिए साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है। समाज में जो घटित होता है। उसी को साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से सामने लाने का प्रयास करता है।

मनोहर श्याम जोशी आधुनिक हिंदी साहित्य के जेष्ठ साहित्यकार थे। लाजवाब किस्सागोई उनके साहित्य की प्रमुख विशेषता रही है। साहित्यिक प्रतिभा और शब्द सामर्थ्य का मिला जुला रूप ही मनोहर श्याम जोशी थे। साहित्य की सभी विधाओं में कथा साहित्य उनकी लोकप्रिय विधा थी। उनके कहानी संसार की सर्व प्रथम विशेषता यह है की, उन्होने मानवजीवन के विविध पक्षों को अपने कहानियों अभिव्यक्त किया है।

जोशी जी ने 'गुडिया' कहानी में मधुली और उसकी माँ आर्थिक अभावो के कारण किस प्रकार जीवन बिताते है यह स्पष्ट किया है। मधुली जिसके पिता गुजर गये है। वह अपनी माँ के साथ बिष्टजी के पुराने मकान में रहती है। वह मकान नही खँडहर है। मधुली की माँ बिष्टजी के यहा काम करके अपना गुजारा करती है। आर्थिक अभावो के कारण मधुली को ठंड से बचने के लिए स्वेटर भी नही मिलता दुसरो का पहना हुआ उसे पहनना पडता है। ''उसकी माँ ने खींच–तानकर पुराना फटा फटाया उनी स्वेटर उसे पहना दिया जिसे बिष्टजी की तीन साल की लडकी पहनकर फाड चुकी थी।''[१]

जब व्यक्ति के पास केवल अभाव और गरीबी होती है। तो उसका मन उसे बार बार अपनी परिस्थिति से उपर उठने के लिए प्रेरित करता है। ऐसी परिस्थिति में वह छटपटाता है। अपनी परिस्थिति सुधारने के लिए वह विवश हो जाता है। वर्तमान जीवन में तो कोई भी व्यक्ति इसप्रकार जीना नहीं चाहँता। इसी कारण आज पैसों का महत्त्व बढता जा रहा है।

'धरती बीज और फल' कहानी में सतीश की जिंदगी आर्थिक अभावों से घिरी हुई है। 'बुआ' के किस्से के माध्यम से उसकी गरीबी को दर्शाया है। ''बगीचे से उन्हें अरबी के पत्ते तोडने थे। पत्ते जिनकी शाम को सब्जी बनानी थी। बाजार से सब्जी खरीदनें के लिए पैसे किसके पास थे?''[२] सतीश के पास बाजार से खरीदने के लिए पैसे नहीं है। अरबी के पत्तों से उसे सब्जी बनानी पडती है। इस प्रकार सतीश अपनी परिस्थिती से जूझता रहता है।

'उसका बिस्तर कहानी' कहानी ऐसे युवक की कहानी है। जिसके लिए शहर में अपने लिए एक बिस्तर जुटा पाना मुश्किल होता है। उसे बिस्तर खरीदने के लिए अनेक कठिनाईयों से गुजरना पडता है। बिस्तर खरीदने के लिए वह रोज खाने में सब्जी के बगैर दाल, चटनी, रोटी खाता है। वह दफ्तर बस के अलावा पैदल जाता है। चाय दिन में एक बार पिता है। बिस्तर खरीदने का उसका यह प्रयास गरीबी की वास्तविकता को दर्शाता है।

'मैडिरा मैरून कहानी में अभिजात्य वर्ग संस्कृति को दर्शाया है। कहानी का नायक अभिजात वर्ग में शामिल होना चाहँता है। जो एँग्रीकल्चर विभाग का सबसे बडा अधिकारी है। उनका मानना है। कि अच्छी कार के बिना ऑफिसर ऑफिसर नहीं रहता। वह अपने पुराने मॉडेल फोर्ड की जगह ऑस्टिन ऐट खरीदना चाहँते है। क्योंकि उनके ज्यूनियर बॅनजी ने भी यह गाडी खरीद ली है। पाण्डें जी कार लेना चाहँते है लेकिन ब्लैंक मार्केट से लेना उन्हें नागवार लगता है। कार को लेकर श्रीमती पाण्डे की घुटन सामने आती है। श्रीमती पाण्डे मिसेस बॅनर्जी के बारे जिक्र करती है। ''जब देखो एक ही रट लगा रखती है। कार, हमारी कार, हमारी नयी ऑस्टिन, हम कार शॉपिंग करने गये, नयी कार के लिए नया ड्राइवर रखा है – बाबा, जान निकाल देती है अपनी कार की बातों से।''[३] पाण्डेजी फिजूल खर्च नही करना चाहते। उनको केवल दो ही चीजे दुनिया में प्यारी है, उनका ओहदा, और पैसा।

'सिल्वर वेर्डिंग' कहानी में जोशी जी ने आधुनिक जीवन के कारण दो पीढियों के बीच संघर्ष को स्पष्ट किया है।

कहानी के नायक यशोधर बाबू पुराने तौर तरीके अपनानेवालों में से हैं। लेकिन उनके बच्चे आधुनिकता को अपनाकर अपनी जीवनशैली को बदलता चाँहते है। इसीकारण दो पीढियों बीच बदलते तत्त्वों, मूल्यों जीवनशैली लेकर संघर्ष उत्पन्न होता हैं। आज हमारी पुरानी पीढी पुराने का आग्रह बताकर नये को नाकरती है। यहा उनकी संकुचित मानसिकता दिखाई देती है। 'सिल्वर वेडिंग' पर चढ्ढा उन्हे चाय, मटठी लड्डू देने के लिए कहते है, इसपर यशोधर जी कहते है, ''अरे, ये वेडिंग एनिवर्सरी वगैरह सब गोरे साहबों के चोंचले है– हमारे यहाँ जो थोडी मानते है?''[४] यशोधर जी के बच्चे 'सिल्वर वेडिंग की पार्टी रखते है, वह भी उन्हें समहाऊ इम्प्रॉपर' लगती है। यशोधर जी के बच्चे पिता से कुछ भी पुछँते नहीं, अपनी मनमानी करते है। उनका अनादर करते है। इस बात का उन्हें बहुत दु:ख होता है।

आधुनिक शैली के कारण वर्तमान जीवन में पिता और पुत्र के बीच तनाव दिखाई देता है।

'मन्दिर के घाट की पेडियाँ' कहानी मे जोशीजी ने निम्नमध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन का चित्र प्रस्तुत किया है।

कहानी का नायक मुरली पारिवारिक परिस्थिति से तंग आकर घर से भाग जाता है। जो हमेशा बैचेन रहता है। बी.ए. तक शिक्षा पाकर कई नौकरियाँ करता है। मास्टरी करने के बाद बम्बई में फिल्म लेखन का काम करता है। पैसा शराब सप्लाई धन्दे से बनाता है। बम्बई से भी वह भाँगता है। जब वह घर जाने की सोचता है तब उसके सामने परिवार का वह दृश्य आता है। ''अधेडावस्था में विधुर होकर ऊहापोह के कई वर्ष काट चुकने के बाद दुबारा शादी करने वाले पिताजी की झुकी हुई कमर, सौतेली माँ की फूहड लालची नजरें, सगी बहन का थुलथुल तन और लिजलिजा मन, सौतेले भाई–बहनों की लम्बी अधनंगी कतार। ऐसे परिवार में कोई प्यार भरा पुनर्मिलन होगा नही।''[५] उसका मन घर लौटना नही चाहँता। उसे ना अपने पिता के मरने का दु:ख होता है, ना परिवार छुटने का। आखिर में वह अकेला ही रहना पसंद करता है। मुरली संवेदना ओं से बहुत दूर जाता हुआ नजर आता है। जो आज के समाज में परिलक्षित होता है।

'धुँआ' कहानी में जोशीजी ने निम्नमध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन का चित्रण किया है। कहानी का नायक हीरा जिसके कुल चार लडके तीन लडकियौ है। गंदगी भरी वातावरण में ढँला हीरा का परिवार हीरा ने जिंदगी में बहुत उँचनीच देखा है। अब वह मरने से पहले अपने पोते की सूरत देखना चाँहता है। ''भगवान एक पोते की सूरत भर दिखा दे फिर सदा के लिए मुझे उठा

ले।''[६] व्यक्ति अपनी कठिन परिस्थिती से जूझते हुए भी मन में कोई न कोई ख्वाईश लिए रहता है।

'एक दुर्लक्ष व्यक्तित्व' कहानी में रोशन बाबू के माध्यम से एक पिता की घुटन दिखाई देती है। उन्हे लगता है कि पिताजी ने उन्हें आवारा समझा, पत्नी ने बच्चा, बच्चों ने खुसट लेकिन उनका स्वंयका कोई अस्तित्व है। उन्हें दु:ख है कि बच्चे कुछ पुछते नहीं। उनका बेटा रामलाल कोर्ट में शादी करता है। तब रोशनबाबू कहते है। आकर बता नहीं सकता था? रोशनबाबू के बच्चे उन्हे कुछ पुछँते नहीं जो मन मे आये वह करते है, उस बात का उन्हें बहुत दु:ख होता है। रोशनबाबू अपने बच्चों से कहते है, ''अरे उल्लू के पट्ठो! रोशनलाल तुम्हारा बाप है, उसके सीने में भी दिल है, सिर में दिमाग है। कुछ कहो तो बताओं तो, समझाओ तो। दे हैव नो कल्चर कल्वर्ड पीपुल है बिकम रेअर।''[७] नयी पीढी अपने कर्तव्य को भूला बैठी है।

जोशी जी ने 'जिन्दगी के चौराहे पर' कहानी में निम्नमध्यमवर्गीय जीवन का यथार्थ प्रस्तुत किया है। कहानी का नायक साहित्यिक सफलता पाना चाहता है। लेकिन वह ऐसी जगह रहता है। जहाँ गंदगी ही गंदगी है। वही गंदी गली ईट के खँडहरनुमा मकान, दाद व खुजली से परेशान शिशुओं का शरीर पानी के नल पर औरतो के गाली गलोच कुडे के ढेर जहाँ ना वह मन से कुछ पढ सकता है और न लिख सकता है। जहाँ दिन रात गाली गलोंच और झगडा होता है। वहा कभी शान्ती नहीं होती। ''इस झगडे के शान्त होने का इन्तजार करना बेकार होगा। झगडा गली वालों के मनोरंजन का एकमात्र साधन है। दिन में औरते आपस में लडती है। और रात में मर्द पीकर आते है और औरतों से लडते है। उन्हे मारते है।''[८]

'शक्करपारे' कहानी में जोशी जी ने छोटे बच्चो के माध्यम से बाल मनोविज्ञान का चित्रण किया है।

'प्रभु तुम कैसे किस्सागों' कहानी में जोशी जी ने वेश्याओं का जीवन एवं परित्याक्ता महिलाओं का वास्तविक चित्रण किया है।

कहानी मे तारा नाम की स्त्री वेश्यालय चलाती है। वेश्यालय में मुरली नाम की लडकी है जो मुरलीपन्थ के देवता को बचपन में समर्पित कर दी गई थी। दुसरी है सुशीला जो सिनेमा में इक्स्टिरा का काम कर चुकी है। कमाठी लक्ष्मी जो रायल सीमा मे काल पडने पर मजूरी करती थी, अब इदर आयी है। इसमें और एक लडकी है जो विधवा परित्याक्ता भी है। जिसका

पहला पति समुद्र में डुब कर मर गया। दुसरा उसे छोडकर भाग गया। सावित्री जिसे तारा ने अब तब तीन लोंगो के साथ हर बिढाया है। एक तारा का अपना सेठ, दुसरा किसी फिल्म का खलनायक और तीसरा ''पुलिस का एक अय्याश अधिकारी, जो इस हलके में आयी हर नयी चीज की जाँच करना सामाजिक कर्तव्य मानता आया है।''[९] वेश्या जो अपने मन से वेश्यालय नहीं जाती उसकी मजबूरी उसे वेश्यालय ले जाती है। यहा पर वेश्या के माध्यम स्त्री जीवन की विडंम्बना व्यक्त हुई है।

मनोहर श्याम जोशी जी ने कहानी साहित्य द्वारा पात्रों के माध्यम से गरीबी का जीवंत चित्र प्रस्तुत किया है। आधुनिक जीवन शैली के कारण रिश्तो मे बिखराव आता है। साथ ही निम्नमध्यवर्गीय जीवन की कठिनाईयों में व्यक्ति जूझतो हुआ नजर माता है। लेखक ने नारी जीवन की विडम्बना को दर्शाते हुए वास्तव में उसका जीवन असहय वेदना को जन्म देनेवाला प्रतीत होता है।

संदर्भ सूचि :

संदर्भ :– मनोहर श्याम जोशी की संम्पूर्ण कहानियाँ, मनोहर श्याम जोशी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, २०१०.

१. मनोहर जोशी, गुडिया, पृष्ठ क्र. ११.
२. मनोहर श्याम जोशी, धरती बीज और फल, पृ. क्र. ८२.
३. मनोहर श्याम जोशी, मेडिरा मैरून पृ. क्र. २१.
४. मनोहर श्याम जोशी, सिल्वर वेडिंग, पृ. क्र. २८.
५. मनोहर श्याम जोशी, मन्दिर घॉट की पैडिया पृ. क्र. ४३.
६. मनोहर श्याम जोशी, धुआ, पृ. क्र. ५१.
७. मनोहर श्याम जोशी, एक दुर्लभ व्यक्तित्व, पृ. क्र. ५१.
८. मनोहर श्याम जोशी, जिंदगी के चौरोहे पर, पृ. क्र. ५१.
९. प्रभु तुम कैसे किस्सागो, पृ. क्र. १२७.